123

ISSN 2231-3885

संवेद

मार्च, 2021 मूल्य : ₹200

फणीश्वर नाथ रेणु

शताब्दी स्मरण

ISSN-2231-3885 SAMVED

संवेद -123

वर्ष-13, अंक-03, मार्च 2021

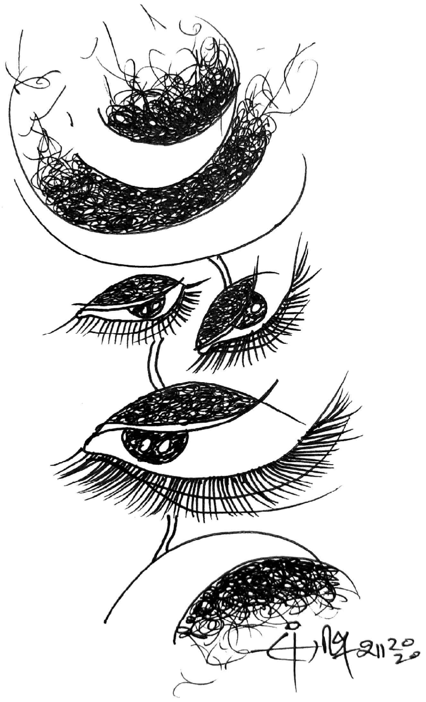

सम्पादक : **किशन कालजयी**

इस अंक में सम्पादकीय सहयोग
प्रकाश देवकुलिश
रत्नेश कुमार सिन्हा
आशा शर्मा
नीरू अग्रवाल

प्रबन्ध सम्पादक : **अतुल माहेश्वरी**

सम्पादकीय सम्पर्क
बी-3/44, सेक्टर-16,
रोहिणी, दिल्ली-110089
मो. : +918340436365
samvedmonthly@gmail.com

आवरण चित्र : संजीव शाश्वती

एकमात्र वितरक
नयी किताब प्रकाशन
1/11829, प्रथम मंजिल, पंचशील गार्ड़न,
नवीन शाहदरा, दिल्ली-110032
फोन : 011-22825606, 9811388579
nayeekitab@gmail.com

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक कुमकुम कुमारी द्वारा
बी-3/44, सेक्टर-16, रोहिणी, दिल्ली-110089
से प्रकाशित और लक्ष्मी प्रिंटर्स, 556, जीटी रोड,
शाहदरा, दिल्ली-110032 से मुद्रित।

इस अंक का मूल्य : दो सौ रुपये
वार्षिक सदस्यता : सात सौ रुपये
रजिस्टर्ड डाक से–एक हजार रुपये
आजीवन : दस हजार रुपये

सम्पादन : अवैतनिक
लेखकों के व्यक्त विचारों से सम्पादक या प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं।
पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद दिल्ली न्यायालय के अन्तर्गत विचाराधीन।

संवेद-123

इस बार

संवेद्य

अन्याय और शोषण के खिलाफ जीत के साहित्यकार / 8

आरम्भ

मधुरेश : फणीश्वरनाथ रेणु और मार्क्सवादी आलोचना / 18

अशोक वाजपेयी : नित्य लीला का गाथाकार / 22

शम्भुनाथ : अंचलबोध की सार्वभौमिकता / 27

प्रेमकुमार मणि : रेणु का लोक / 32

बहादुर मिश्र : रेणु का कवि कर्म / 37

रेणु के उपन्यास

विनोद शाही : हिन्द स्वराज की अन्तर्कथा (मैला आँचल) / 47

गजेन्द्र पाठक : समकालीन परिदृश्य का आईना (मैला आँचल) / 57

विनोद तिवारी : लिंग-भेदी नैतिकता की सर्जनात्मक आलोचना (मैला आँचल) / 65

रामप्रकाश कुशवाहा : लोक-नदी का महाकाव्यात्मक आख्यान (परती : परिकथा) / 74

रणेन्द्र : आदर्शों की धुन्ध में खोयी रचना (कितने चौराहे) / 78

अर्जुन कुमार : रेणु का सपना (कितने चौराहे) / 88

मिथिलेश : आत्मपीड़न की संजीवनी धारा (कलंक मुक्ति) / 96

देवेश : सम्बन्धों के स्वार्थवादी इस्तेमाल की कथा (पल्टू बाबू रोड) / 104

पीयूष राज : विस्थापन का शोक-गीत (जुलूस) / 108

रेणु का कथा संसार

रविभूषण : स्वप्नभंग और लोकसंस्कृति की विदाई (तीसरी कसम अर्थात मारे गये गुलफाम) / 113

प्रभु जोशी : आन्तरिक पीड़ा का मर्म (कलाकार) / 131

तरसेम गुजराल : सर्वसत्ता का प्रतिकार (प्रजासत्ता) / 136

अवधेश रंजन : वासना और अध्यात्म का अन्तर्द्वन्द्व (तीर्थोदक) / 138

प्रकाश देवकुलिश : आंचलिकता के घेरे से बाहर (कस्बे की लड़की) / 141

धीरंजन मालवे : विश्व साहित्य की अनमोल धरोहर (संकट) / 145

राजेन्द्र दानी : कुटिल आग्रह की परिणति (टेबुल) / 150

सुशीला टाकभौरे : सामाजिक संवेदना का मनोविज्ञान (हाथ का जस और बाक का सत्त) / 152

मदन कश्यप : ऐसे भी बदलता है गाँव (एक रंगबाज गाँव की भूमिका) / 157
चन्द्रकला त्रिपाठी : स्त्री शक्ति की रहस्यमयता (अभिनय) / 159
मंजु रानी सिंह : शोषण की मूक व्यथा (ताँबे एक्ला चॉलो रे) / 163
भालचन्द्र जोशी : यथार्थ और मनोविज्ञान का प्रतिक्रियात्मक रूपक (अतिथि सत्कार) / 168
आशुतोष : झूठे विद्रोह की कथा (अगिनखोर) / 174
योगेन्द्र : उदात्त पात्रों की गाथा (संवदिया) / 179
रविशंकर सिंह : लोक कलाकार की अन्तर्वेदना (रसप्रिया) / 183
रोहिणी अग्रवाल : प्रेम की चाह और व्यवस्था का शास्त्र (तीसरी कसम उर्फ मारे गये गुलफाम) / 189
मृत्युंजय : नेपथ्य का नायक ही नेपथ्य का भारत (नेपथ्य का अभिनेता) / 200
जयप्रकाश : पुरुष की लालसा और स्त्री की अबूझ आकांक्षा के बीच (मिथुन राशि) / 205
पूनम सिंह : कलाकार के आर्त्तनाद का उत्स (कपड़घर) / 210
सुभाष चन्द्र कुशवाहा : लोक मान्यताओं का रचनात्मक दस्तावेज (सिरपंचमी का सगुन) / 215
मीता दास : संगीत की शास्त्रीयता का लोकपक्ष (तीन बिन्दियाँ) / 219
रंजना जयसवाल : प्रगतिशील मन की पीड़ा (विकट संकट) / 223
अनवर शमीम : लोक आस्था का मिथक (काक चरित) / 226
प्रदीप बिहारी : उजास की कहानी (टौन्टी नैन का खेल) / 230
प्रियंकर पालीवाल : पतनोन्मुख राजनीति से सीधा साक्षात्कार (आत्मसाक्षी) / 234
राकेश रेणु : छद्‌म क्रान्तिकारिता का प्रहार (अग्नि संचारक) / 237
मणीन्द्र नाथ ठाकुर : कलाकार के मनोविज्ञान का दार्शनिक पक्ष (ठेस) / 241
अजय वर्मा : प्रेम का शाश्वत मर्म (एक श्रावणी दोपहरी की धूप) / 246
गणेश चन्द्र राही : जीवन और जगत का रंग (मन का रंग) / 250
रत्नेश कुमार सिन्हा : वैज्ञानिक उपलब्धि की स्वीकृति (जैव) / 255
रमा : पुरुष मन से स्त्री का प्रतिवाद (नित्य लीला) / 260
पंकज मित्र : मूल से विच्छिन्न होने की व्यथा कथा (विघटन के क्षण) / 264
अरुण होता : जीवन की पाठशाला से जन्मी कहानी (दसगज्जा के इस पार और उस पार) / 267
विजय कुमार भारती : इतिहास बोध, साम्प्रदायिकता और स्त्री चेतना (जलवा) / 273
रीता सिन्हा : रेणु का सौन्दर्यशास्त्र (भित्ति चित्र की मयूरी) / 278
आशा गहलोत : प्रेम का अध्यात्म रचती सौन्दर्यधर्मी कहानी (जड़ाऊ मुखड़ा) / 282
भरत प्रसाद : थोड़ा लिखना बहुत समझना (धर्मक्षेत्रे-कुरुक्षेत्रे) / 285
सव्य साचिन : मोहभंग की व्यथा यात्रा (पार्टी का भूत) / 288
रूपा सिंह : आजाद भारत में मोहभंग (वण्डरफुल स्टुडियो) / 292
रेखा सेठी : प्राणों की धमक (पहलवान की ढोलक) / 296

विभा ठाकुर : दबंग रतनी की कथा (नैना जोगिन) / 300
कविता : एक प्रेमकथा के विद्यापति (एक लोकगीत के विद्यापति) / 305
जीतेन्द्र वर्मा : पहली कहानी बरगद के पास (बटबाबा) / 309
कमलेश वर्मा : मन के उलझाव की अभिव्यक्ति (रेखाएँ : वृत्तचक्र) / 311
अनीश अंकुर : संघर्ष की जद्दोजहद और सौन्दर्य की चाहत (लाल पान की बेगम) / 315
सोनी पाण्डेय : मानव सभ्यता के स्याह पक्ष की कथा (न मिटने वाली भूख) / 320
ऋषि कुमार : पलायन के विरोध में (उच्चाटन) / 324
आकांक्षा पारे काशिव : समर्थ पात्रों की कहानी (अच्छे आदमी) / 328
अभिषेक कश्यप : एक दिन फिर आना (आदिम रात्रि की महक) / 331
प्रतिभा प्रसाद : अन्धकार एवं मौन का विद्रोहात्मक स्वर (खण्डहर) / 334
मनोज कुमार सिंह : विकास की मशाल (पंचलैट) / 338
आशुतोष : जीवन के वास्तविक ताप की कहानी (बीमारों की दुनिया में) / 343
निशान्त : सामूहिक पाठ के लिए एक जरूरी कहानी (इतिहास, मजहब और आदमी) / 347
अमित मनोज : गोआनीज लेडी के भीतर की दुनिया (लफड़ा) / 352
किंगसन सिंह पटेल : कैदे दास्तां (आजाद परिन्दे) / 356
संजय राय : कल्पना की दृष्टि सम्मत उड़ान (अक्ल और भैंस) / 359
नवनीत नीरव : एक सांगीतिक प्रेम कहानी (प्राणों में घुले रंग) / 363
राजीव कुमार : सामाजिक मरम्मत की मुकम्मल कारीगिरी (रसूल मिस्तरी) / 366
अमित कुमार सिंह : एक नदी और उसके दो पाटों के उजड़ने-बसने की कहानी (रखवाला) / 374
मनीष : वीराने को बसाने की दास्तान (रोमांस शून्य प्रेम कथा की एक भूमिका) / 379
अंकित नरवाल : जीवन की धूसर छवियों का चित्रण (ना जाने केहि वेल में) / 384
नीलमणी भारती : कहानी की तलाश में (एक अकहानी का सुपात्र) / 387
नीलम सेन : छद्म का प्रतिकार (तव शुभ नामे) / 391

रेणु का व्यक्तित्व और कृतित्व

आनन्द कुमार : सृजन और संघर्ष का समावेशी व्यक्तित्व / 396
सुरेन्द्र नारायण यादव : कृषि के प्रवीण चिन्तक / 402
भारत यायावर : रेणु रंग के दो प्रसंग / 412
अरविन्द कुमार : रेणु की कहानियों का आरम्भिक काल / 416
राजेश कुमार : मिरदंगिया का खेल तमाशा / 423
योगेन्द्र आहूजा : रेणु जी की छाप / 429
शिवदयाल : रेणु की वैचारिक चेतना / 435

सुनील कुमार पाठक : रेणु और प्रेमचन्द के उपन्यासों में गाँव / 441
राम विनय शर्मा : रेणु की कथा-प्रकृति / 445
तारानन्द वियोगी : रेणु और नागार्जुन / 451
संजय कुमार सिंह : लोक जीवन का अद्‌भुत चितेरा / 458
राकेश बिहारी : माँ से मित्र होती स्त्रियों की कहानियाँ / 463
नीरज खरे : कहानी का प्रेमचन्द से भिन्न अवलोकन बिन्दु / 468
ऋषिकेश राय : रेणु का लोक संसार / 474
सुनीता गुप्ता : रेणु की स्त्री दृष्टि / 477
गौरीनाथ : प्रीत पीड़ा राग / 484
प्रमोद मीणा : कोरोना के दौर में रेणु / 488
मृत्युंजय पाण्डेय : गाँधी, नेहरू और रेणु / 495
आशुतोष पार्थेश्वर : रेणु की भारत की खोज / 501
सत्यप्रकाश सिंह : जाति का सत्य और कटु यथार्थ / 508
रश्मि रावत : दीप्त है जिनसे रेणु का रचना संसार / 515
पल्लवी प्रसाद : मृत्यु-संगीत / 522
अनिता देवी : ग्रामीण संवेदना के कथाकार / 526
राजीव कुमार सिंह : रक्तपा और सिद्धिदा / 531
सन्तोष कुमार बघेल : प्रेरणादायी सफर का संघर्ष / 535
रामायन राम : रेणु का कथा साहित्य और जाति / 539
रामनरेश राम : उत्तर औपनिवेशिक यथार्थ और विभाजन का दर्द / 545
सुशील कुमार : रेणु की आंचलिकता और अधूरी आजादी का सच / 549
सत्यभामा : रेणु और उनके कलाकार पात्र / 557

रेखांकन

शेखर

संजीव

के.के.

पंकज दीक्षित

वन्दना पवार

अन्याय और शोषण के खिलाफ जीत के साहित्यकार

भारत में अँग्रेजी राज के दौरान नमक कानून बना था। इस कानून के अनुसार नमक उत्पादन और विक्रय पर भारी कर लगा दिया गया था। 6 अप्रैल 1930 को महात्मा गाँधी के नेतृत्व में बहुत लोगों ने साबरमती गाँव से डांडी तक की यात्रा करके नमक बनाकर कानून का विरोध किया था। इस विरोध का देशभर में व्यापक प्रभाव पड़ा था। विरोध से बौखलाकर ब्रिटिश सरकार ने गाँधीजी समेत बहुत लोगों को गिरफ्तार कर लिया। गाँधीजी की गिरफ्तारी का विरोध पूरे देश में हुआ। उस समय फणीश्वर नाथ रेणु अररिया (पूर्णिया, बिहार) हाई स्कूल में पढ़ते थे। महात्मा गाँधी की गिरफ्तारी की खबर आते ही अररिया का पूरा बाजार बन्द हो गया, स्कूल के सभी छात्र बाहर आ गये। दूसरे दिन भी छात्रों की हड़ताल जारी रही। रेणु ने अपने स्कूल के असिस्टेन्ट हेडमास्टर को रोका, इस पर बिफरकर उन्होंने कहा- "तुमलोग चूल्हे भाड़ में जाते हो, जाओ; मुझे क्यों खींचते हो?" इस पर बालक रेणु का जवाब था- 'आप हमारे गुरु जो हैं।' दूसरे दिन स्कूल में दो तीन घण्टी के बाद प्रधानाध्यापक महोदय की सूचना आयी कि सभी हड़ताली छात्रों को सजा के तौर पर पचास पैसे का जुर्माना देना है। जो किसी अन्य कारण से स्कूल नहीं आ पाये, वे आवेदन दें। हड़ताल में भाग लेने के लिए जो छात्र माफी माँगना चाहें वे भी आवेदन लिख सकते हैं। नोटिस के अन्त में विशेष रूप से रेणु का नाम लिखकर कहा गया था कि असिस्टेण्ट हेडमास्टर साहब के साथ अशोभनीय बर्ताव के लिए सारे स्कूल के छात्रों के सामने इस लड़के को दस बेंत लगायी जाएगी। इस सूचना के बाद रेणु पूरे स्कूल के हीरो हो गये। कई साथी और वरिष्ठ छात्र उन्हें शाबाशी दे रहे थे तो कुछ उन्हें माफी माँग लेने की सलाह दे रहे थे। कई शिक्षक भी उन्हें समझाने और धमकाने आये, लेकिन रेणु ने माफी नहीं माँगी। पहली बेंत पर रेणु ने 'वन्दे मातरम' का नारा लगाया, वहाँ मौजूद छात्र नारे को दोहरा रहे थे। दूसरी बेंत पर रेणु ने नारा लगाया—'महात्मा गाँधी की जै'। तब तक बाजार, कचहरी और सड़क के लोग स्कूल आ गये थे। तीसरी बेंत